Volume-3, Issue-05, May 2016 ISSN: 2349-7637 (Online)

RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)

Research Paper

Available online at: www.rhimrj.co.in

साहित्यिक पत्रकारिता का सृजन और नवज्योति समाचार पत्र का शुरूआती योगदान

रोहित कुमार सोनी

सृजन अर्थात निर्माण करना। नवनिर्माण तभी संभव है जब निर्माता उस निर्माण के लिए चित–मन के साथ उससे जुड़ी विषयों का गहन शोध करे और उसे महसूस करे। नियम वस्तुओं के निर्माण और लेखन सामग्री के सृजन दोनों में लागू होता है। अब चूंकि हम लेखन सामग्री के सृजन की बात कर रहे हैं, इसलिए यह जरूरी है कि लेखन सामग्री का सृजन दशा–दिशा के अनुरूप हो।

पत्रकारिता में साहित्यिक विषय वस्तुओं के सृजन की लोकप्रियता तभी सफलता के आयाम छुएंगी जब जनता उसे पंसद करेंगी। नवज्योति समाचार पत्र की शुरूआत आजादी से पहले 1936 में हुई। तब से ही नवज्योति में पत्रकारिता में साहित्य को महत्वपूर्ण स्थान दिया। साहित्य से स्वतंत्रता क्रान्ति की अलख जगाई। इसके लिए जनता की पसंद और जायके को पहचान कर साहित्य को पेश करने के लिए कई कॉलमों, व्यंग्यों, यात्रा चित्रान्त, कहानियों, गीतों, कविताओं और लेखों के लिए विशेष स्थान चिन्हित या सृजित किए जाते थे और विषय भी वैसे भी चुने जाते थे। जो कि जनता और परिस्थितियों के अनुरूप हों और ज्वलंत हों।

जनता की पसंद के साथ ही उसकी वैचारिक क्षमता को मजबूत बनाने, स्वच्छ सोच व दृढ़ विचारशील भारत निर्माण के लिए सामाजिक सरोकारों, जनचेतना जागृत्ति, देश के हालातों के प्रति लोगों की मानसिकता सकारात्मक करने, ब्रिटिश सरकार की चूलें हिलाने और स्वाधीनता संग्राम के आंदोलन में अपनी भूमिका पर खरा उतरने के लिए **वर्ष 1936** से राजस्थान के अजमेर जिले से प्रकाशित **'नवज्योति'** समाचार पत्र ने ऐसे साहित्यिक लेखों, कहानियों, कविताओं और गीतों को भी प्रमुखता से प्रकाशित किया जो कि संबंधित विषय में क्रांति या आंदोलन को जन्म दे सके।

नवज्योति ने साहित्यिक सामग्री को निश्चित स्थान देने के लिए तय नाम से कॉलम प्रकाशित किए। अधिकांशतः के नाम उसकी साहित्यिक प्रवृत्ति के अनुरूप ही थे। जैसे साहित्यिक प्रगति में साहित्य के नए प्रकाशन, साहित्यिक समीक्षा में पुस्तकों की विषय वस्तु का विश्लेषण, कहानियों में कहानियां इत्यादि।

इसके अलावा व्यंग्य में हल्के–फुल्के अंदाज में कहीं जाने वाली बात पाठक का मनोरंजन तो करती ही थीख साथ ही उसे गंभीर सोच को भी विवश करती थी। कई नई बहसों को जन्म देती थी और समाज के ज्वलंत मुद्दों, समस्याओं को इंगित करती थीं। इसके लिए **'चक्कर की चटनी'** कॉलम बड़ा प्रसिद्व हुआ, जो लगातार कई वर्षो तक नवज्योति में छपा।

इसके अलावा कविताओं के लिए तो नवज्योति के प्रबंधन की नीति इतनी शिथिल थी कि एक अंक में ही आधा दर्जन और इसमें भी अधिक कविताएं प्रकाशित कर दी जाती थीं। इसके लिए कोई विशेष कॉलम नहीं था, नवज्योति ने कवियों को ऐसा मंच दिया कि उनकी ये कविताएं अंग्रेजी हुकूमत की तोपों पर भी भारी पड़ती थी। उनके अत्याचारों का जवाब कवियों की कविताओं से जनआंदोलन को पनपाने में काफी कागर सिद्व हुआ। मुख्य पृष्ठ से लेकर अंतिम पृष्ठ तक सभी जगह कविताएं प्रकाशित हुआ करती थीं। नवज्योति में प्रकाशित साहित्यिक विषय निम्न प्रकार हैः–

कहानियां

नवज्योति के प्रकाशन की शुरूआत वर्ष अक्टूबर 1936 में हुई थी। लेकिन साहित्य के महत्व को उद्भव काल के तीन माह बाद से ही कहानियों के रूप में हो चुकी थीं। नवज्योति के मिले अंकों में पहली कहानी 31 जनवरी 1937 के अंक में लेखक श्री राम हिन्दूस्तानी की **'निर्वासित'** शीर्षक से छपी। इसके बाद नवज्योति में कहानियों के प्रकाशन की अनवरत प्रकाशन होता गया। एक–एक पेज की कहानियां नवज्योति में प्रमुखता से प्रकाशित की जाती थी। 1940 के दशक में तो नवज्योति के हर साप्ताहिक अंक में कहानियां को जगह मिलती थी। कहानी लिखा शीर्षक इसे इंगित करता था। लेखक शफीक बानों की **'खुदा की मर्जी'**, नवल प्रभाकर कही **'हृदय परिवर्तन'**, माणिक्यलाल शर्मा की **'बलि का बकरा'**, सगरूपचंद भण्डारी की **'आत्मबलिदान'**, बलवंत सिंह तालेसरा की **'राष्ट्र की थाती'** हरिदत्त हरिकृष्ण दवे की **'मृत्यु या मुक्ति'**, विद्यावती गुप्त की **'उन्मादिनी'**, वीरेन्द्र मालवीय की **'स्वर्ग की सृष्टि'**, मोहनलाल नेहरू की **'अंधेरी नगरी'**, श्याम संयासी की **'प्रेम ना जाने जात–कुजात'** श्रीलाल पालीवाल की **'चित्र'**, कक्कू की **''छूट भैय्या'**, श्रीराम हिन्दूस्तानी की **'योगीराज का संदेश'**, इत्यादि शुरूआती दौर की कहानियां हैं।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

लेख

नवज्योति का साहित्य प्रेम ही था कि समाचार पत्र के प्रकाशन अवधि के एक माह होने से पहले समसामयिक विषयों से जुड़े लेखों के महत्व को समझा गया। सामाजिक बुराईयों, अंग्रेजों के दमन चक्रम, आजादी की लडाई को आंदोलन का रूप देने के लिए लोगों में जनजागरण करने, किसानों, दलितों की दुर्दशाओं, महिलाओं की दोयम स्थिति, युवाओं को प्रेरणा और जागृत्ति लाने, शिक्षा इत्यादि के लेख छपना शुरू हो गए थे। समाचार पत्र के रिकॉर्ड के खंगालने पर पहला लेख 7 अक्टूबर 1936 के अंक में **'नितांत निकम्मी'** शीर्षक से जागीदारी प्रथा के खिलाफ मिला। इसे सत्यनारायण सराफ ने लिखा था। तब नवज्योति टेबलॉयड स्वरूप का अखबार था। पूरे एक पेज यह लेख जागीरदारी प्रथा के खिलाफ आग उगल रहा था। इसका क्रम लगातार चला और 1990 के दशक तक लेखों को प्राथमिकता से अनवरत छापा गया। नवज्योति में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शराबबंदी, राजशाही सहित स्वतंत्रता संग्राम से जुडे मुद्दों पर कई लेख लिखे। प्रसिद्व लेखिका महादेवी वर्मा ने भी महिला सशक्तिकरण और उसकी दुर्दशा पर कई लेख नवज्योति में लिखे। पंडित जवाहर लाल नेहरू, रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसी हस्तियां भी लेख लिखने की फहरिस्त में शामिल थीं, जिन्होंने देश के कई मुद्दों को उठाने के लिए नवज्योति को मंच बनाया।

साहित्यिक प्रगति

नवज्योति उस दौर पर पहला अखबार था जिसने अपने अंकों में नव प्रकाशित साहित्यिो के बारे में एक नियमित कॉलम शुरू किया। आज के परिदृश्य में इस कॉलम को साहित्य का प्रोफाइल कह सकते हैं। इस कॉलम में नवज्योति नए प्रकाशित साहित्यो के बारे में पूरा अपडेट देता था। जेसे पुस्तक का प्रकाशन, लेखक, विषय के बारे में विस्तार से बताया जाता था। **पहला साहित्यिक प्रगति कॉलम 31 जनवरी 1937** में प्रकाशित हुआ। इसमें **'एशिया में प्रभात'** नाम की पुस्तक विषय पर पाठको को बताया गया, जिसके मूल लेखक तो पॉल रिचर्ड थे, लेकिन हिन्दी में अनुवाद कल्याण सिंह शेखावत के करने से लेकर पुस्तक के बारे में सारा अपडेट पाठकों को दिया गया। नवज्योति में साहित्यिक प्रगति का यह कॉलम एक–दो साल नहीं बल्कि 1970 के दशक तक प्रकाशित हुआ।

नवज्योति में 'मेरी कहानी' नाम से कॉलम का भी निरंतर प्रकाशन होता था, जिसमें साहित्यिक जगत में साहित्यकारों और लेखकों की आने वाली नई किताबों के बारे में जानकारी पाठकों को उपलब्ध कराई जाती थी और साहित्यिक सृजन को प्रोत्साहित किया जाता था। पहला **'मेरी कहानी'** का कॉलम नवज्योति ने **फरवरी 1937** के मिले अंक में देखने को मिला। इसमें आजादी के बाद भारत के पहले प्रधानमंत्री बने पंडित जवाहर लाल नेहरू की आत्मकथा पुस्तक के बारे में भी प्रकाशित किया गया था। इस कॉलम में किताब के बारे में जानकारी, उसके प्रकाशक का पता और मंगाने के लिए मनीऑर्डर भेजने जैसी जानकारी लिखी गई थी।

व्यंग्यात्मक कॉलम

समाज, देश–दुनिया के ज्वलंत मुद्दों से जोड़कर किसी विषय पर कटाक्ष करने या चुटकी भर समाज को विषय पर गंभीर चर्चा को प्रोत्साहित करने को हम संक्षिप्त शब्दों में व्यंग्य कह सकते है। नवज्योति में समाज और देश–प्रदेश से जुड़ी घटनाओं पर चुटकी भर साहित्यिक अंदाज में बात कहने के लिए **'चक्कर की चटनी'** नाम से व्यंग्य प्रकाशन **जनवरी 1939** से शुरू किया। जिसे लेखक अपने मिथ्या नाम स्वामी चटपटानंद चरसी से लिखा करते थे। इन कॉलमों में वे ताजा हालातों पर व्यंग्य बाण चलाया करते थे। यह कॉलम काफी सालों तक नवज्योति में लगातार प्रकाशित हुआ। इसके बाद भी अन्य नामों से नवज्योति में कॉलम छपते रहे। नवज्योति के व्यंग्यात्मक कॉलम लेखन का सिलसिला आज भी जारी है।

साहित्य समीक्षा

किसी भी नव प्रकाशित साहित्य की चीर–फाड़ अर्थात उसमें लिखें विषय की पूरी तरह से निष्पक्ष समीक्षा प्रकाशन नवज्योति में निरंतर होता रहा है। नवज्योति में साहित्यिक समीक्षाएं प्रकाशन का सिलसिला भी प्रकाशन तिथि से एक साल बाद ही शुरू कर दिया था। **28 नवम्बर 1937** को नवज्योति में पहली साहित्य समीक्षा लिखी गई। पहली समीक्षा **'रसतंत्र सारव सिद्व प्रयोग संगह'** पुस्तक की थी, जिसके लेखक ठाकुर नाथ सिंह वर्मा थे। यह पुस्तक आयुर्वेद चिकित्सा पद्वति पर लिखी गई थी। नवज्योति में साहित्य समीक्षा भी अनवरत नई पुस्तक आने पर छापी जाती थी, आज भी यह बिना रूके जारी है।

यात्रा वृतान्त

लेखन की एक विद्या यात्रा वृतान्त भी है। जिसमें किसी यात्रा, किसी घटना या किसी विषय को अनुभव कर उसके बारे में सचित्र वर्णन होता था। यात्रा वृतान्त भी नवज्योति में आये दिन उस दौर में प्रकाशित होते थे। इसका प्रकाश भी नवज्योति 1937

से ही करता रहा। **दिसम्बर 1937** में भीष्मसिंह चौहान ने **'हमारी सारनाथ यात्रा'** शीर्षक से यात्रा वृतान्त लिखा। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने **'मेरी चीन की यात्रा'** नाम से अपने चीन दौरे के अनुभव को नवज्योति के माध्यम से पाठकों से साझा किया।

कविताएँ

नवज्योति में आजादी से पूर्व के अंकों में कविताओं की भरमार रही। कविताओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता था। यहां तक मुख्य पृष्ठ एक–दो बार नहीं दर्जनों बार कविताओं से पूरा अटा होता था। कविताओं को नवज्योति ने कितना महत्व दिया इसके अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि मुख्य पृष्ठ पर केवल और केवल कविताएं दर्जनों बार प्रकाशित की गई। राम हिन्दूस्तानी की लिखित कविता **1937** में आतंरिक पृष्ठों पर **'बस अंत आया'** शीर्षक से प्रकाशित की थी। सन **1939** में नवज्योति ने मुख्य पृष्ठ पर कविताओं को स्थान देना शुरू किया। शुरूआती कविताओं के रूप में नटवरलाल चतुर्वेदी रचित **'किसान का परिचय'** कविता प्रकाशित हुई। इसके बाद आजादी के मतवालों को ऊर्जा देने, दलितों को उठ खड़े होने, युवाओं में स्वतंत्रता संग्राम का दंभ भरने सहित आजादी तक कई मुद्दों पर कविताओं को यहां स्थान मिला।

एकांकी नाटक

एकांकी नाटक का हालांकि कोई कॉलम नहीं था, लेकिन समय–समय पर लेखकों के आने वाले इस साहित्यिक लेखन की विद्या को नवज्योति में स्थान मिला। नवम्बर **1941** में भुवनेश्वर प्रसाद की **'रोशनी की आग'** प्रकाशित हुआ।

नाट्य चित्र

1937 में नाट्य चित्र भी प्रकाशित होने लगे। **'त्यागमूर्ति'** के नाम से साप्ताहिक रूप से नाटकों का वर्तमान दिनों में टीवी पर आने वाले सीरियलों के समान अंशों में प्रकाशित करने का भी नया प्रयोग किया, जो काफी हद तक साहित्य के नव सृजन का उदाहरण है।

संदर्भ–

1. **नवज्योति समाचार पत्र के वर्ष 1936 से 1950 तक के प्रकाशित अंक**

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)